पाठ 11: यतींद्र मिश्र (नौबतखाने में इबादत)

प्रश्न 1: शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

RBSE 2020 RBSE 2023

शहनाई की दुनिया में डुमराँव गाँव (बिहार) को दो मुख्य कारणों से याद किया जाता है:

1. **नरकट घास:** शहनाई को बजाने के लिए जिस 'रीड' (अंदर की पतली नली) का प्रयोग होता है, वह 'नरकट' नाम की घास से बनाई जाती है। यह विशेष घास डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाती है।

2. **बिस्मिल्ला खाँ का जन्मस्थान:** विश्व प्रसिद्ध शहनाई वादक और भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म इसी डुमराँव गाँव में हुआ था।

प्रश्न 2: बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

RBSE 2022 RBSE 2025

Most Important

शहनाई को एक 'मंगल वाद्य' माना जाता है, जो शादी-ब्याह, मंदिर और शुभ अवसरों पर बजाया जाता है। उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ ने शहनाई के गायन को उस शिखर तक पहुँचाया जहाँ कोई और नहीं पहुँच सका। उन्होंने 15 अगस्त 1947 को देश की आज़ादी के शुभ अवसर पर लाल किले से शहनाई बजाई थी। 80 वर्षों तक वे शहनाई के सच्चे साधक रहे। उनकी शहनाई की आवाज़ सुनते ही मन में मंगल (शुभ) की भावना आती थी। इसलिए उन्हें मंगलध्वनि का नायक कहा गया है।

प्रश्न 3: 'सुषिर वाद्यों' से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी?

RBSE 2024 RBSE 2026

सुषिर वाद्य: जिन संगीत वाद्यों को फूँक मारकर बजाया जाता है (जिनमें नाड़ी या नरकट होती है), उन्हें 'सुषिर वाद्य' (जैसे बाँसुरी, शहनाई आदि) कहा जाता है।

शाह की उपाधि: शहनाई की आवाज़ अन्य सभी फूँक कर बजाए जाने वाले वाद्यों में सबसे अधिक मधुर और कर्णप्रिय (कानों को अच्छी लगने वाली) होती है। अरब देशों में भी फूँक वाले वाद्यों को 'नय' कहा जाता है। अपनी मिठास और शुभ अवसरों पर बजाए जाने के कारण शहनाई को सभी सुषिर वाद्यों का 'शाह' (राजा) माना गया है।

प्रश्न 4: बिस्मिल्ला खाँ के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

RBSE 2025

बिस्मिल्ला खाँ के जीवन से हमें कई प्रेरणाएँ मिलती हैं:

1. **धर्मनिरपेक्षता:** एक पक्के मुसलमान होते हुए भी वे बनारस के बालाजी मंदिर में शहनाई बजाते थे और गंगा मैया का सम्मान करते थे। यह गंगा-जमुनी तहज़ीब (हिंदू-मुस्लिम एकता) की मिसाल है।

2. **सादगी और विनम्रता:** भारत रत्न जैसा सर्वोच्च सम्मान पाने के बाद भी उन्हें कोई घमंड नहीं था। वे एक फटी लुंगी में भी मस्त रहते थे ("फटा सुर न बख्शे")।

3. **सतत सीखने की इच्छा:** वे हमेशा खुद को एक विद्यार्थी मानते थे और भगवान से 'सच्चे सुर' की ही माँग करते थे।

Schorbit